लड़ाई

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

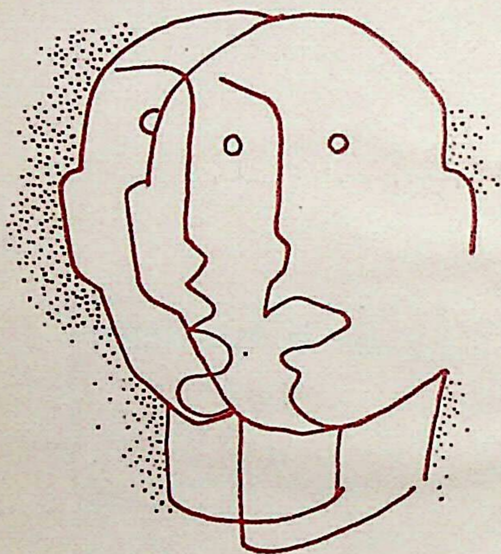
कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।



सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

का नया नाटक :

लड़ाई

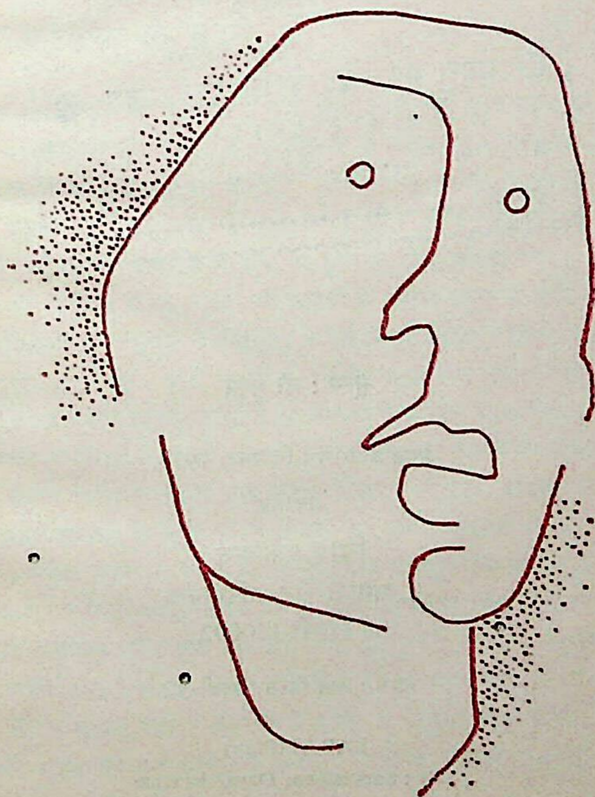




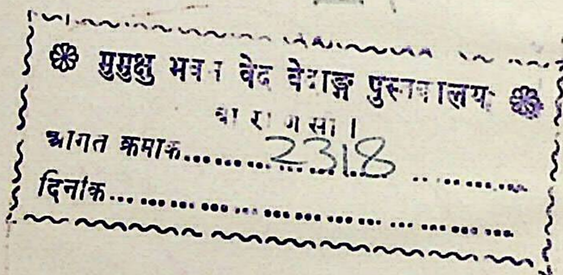
लिपि प्रकाशन
1, अंसारी रोड, नई दिल्ली-2

लड़ाई

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना



पता : श्री सर्वेश्वरदयाल सक्सेना,
मुख्य उप-सम्पादक,
'दिनमान', 10 दरियागंज, नई दिल्ली-110002.



मूल्य : नौ रुपये

प्रथम संस्करण : सितम्बर, 1979

प्रकाशक

लिपि प्रकाशन
1, अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-110002

मुद्रक : शान प्रिंटर्स, दिल्ली-32

LARAI (Play)
By : Sarveshwar Dayal Saxena

इस नाटक के बारे में

'लड़ाई' का मंच जन्म 'बकरी' से कोई चार साल पहले हुआ था। इसका मूल रूप कहानी का है जो डा० लोहिया के जीवनकाल में उनसे एक बातचीत के बाद लिखी गई थी और उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हुई थी। कहानी की हिंदी जगत में बहुत चर्चा हुई। ओम शिवपुरी ने इस कहानी को अपनी देख-रेख में मंच प्रस्तुति के योग्य बनवा लिया और उनके ही निर्देशन में यह पहले नई दिल्ली के माडर्न स्कूल में खेली गई। फिर त्रिवेणी कला संगम में दिशांतर ने इसे प्रस्तुत किया। निर्देशन ओम शिवपुरी का ही था। मंच प्रस्तुति में कोशिश कहानीपन बनाए रखने की ही थी। इसके बाद आकाशवाणी ने इसे नाटकों के अखिल भारतीय कार्यक्रम में प्रस्तुत करने की मांग की। अत: इसका रेडियो नाटक रूप लेखक ने स्वयं तैयार किया। उसमें कुछ जोड़ा घटाया। इसका रेडियो नाटक रूप आकाशवाणी के सभी केन्द्रों से देश की सभी भाषाओं में प्रसारित हुआ। तमिष भाषा में चो ने अपने लोकप्रिय पत्र तुग़लक में इसे रेडियो नाटक के रूप में ही धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया। बकरी की ख्याति के बाद प्रकाशक तथा कुछ रंगकर्मी मित्रों द्वारा इसे उपलब्ध कराने पर जोर पड़ने लगा। अंततः लेखक को फिर बैठना पड़ा और इसका मंच रूप तैयार करना पड़ा। कहानी के ढांचे से निकल पाना कठिन था। रेडियो नाटक का रूप सामने था। अतः उसी के आधार पर यह मंच

रूप तैयार हुआ है। ज्यादा हेरफेर नहीं किया जा सका। केवल उद्घोषक की जगह गायक रख दिया गया है। एक बार एक विधा में रचना कस जाने पर दूसरे में फिर नये सिरे से ढालना स्वयं लेखक के लिए भी कठिन हो जाता है। यह रचनात्मक कठिनाई इसे रंगमंच के लिए तैयार करने में इस लेखक ने अनुभव की है।

यह एक सोद्देश्य और सीधा नाटक है। कोई नया शिल्पगत प्रयोग या बारीकी इसमें नहीं है। इसे सड़क पर, स्कूलों-कालेजों और रंग-शिविरों में खेला जा सकता है। हर दृश्य की सूचना संकेतपट द्वारा दी जा सकती है।

यह नाटक प्रतिबद्ध नाटक है और वामपंथी विचारों तक उठानेवाली पहली सीढ़ी है। यह नाटक दिखाता है कि कैसे अकेली लड़ाई समाज और व्यवस्था को तोड़ती नहीं स्वयं गरिमामय होते हुए भी टूटी जाती है सार्थक नहीं रह जाती। इस ट्रेजडी को अनुभव करना संगठित प्रयास की ओर बढ़ना है। इसे लेखक का पहला नाटक माना जाए और यदि प्रतिबद्ध रंगकर्मियों की सारी जरूरत इससे पूरी न पड़ती हो तो उसके लिए लेखक को क्षमा किया जाए।

—सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

लड़ाई

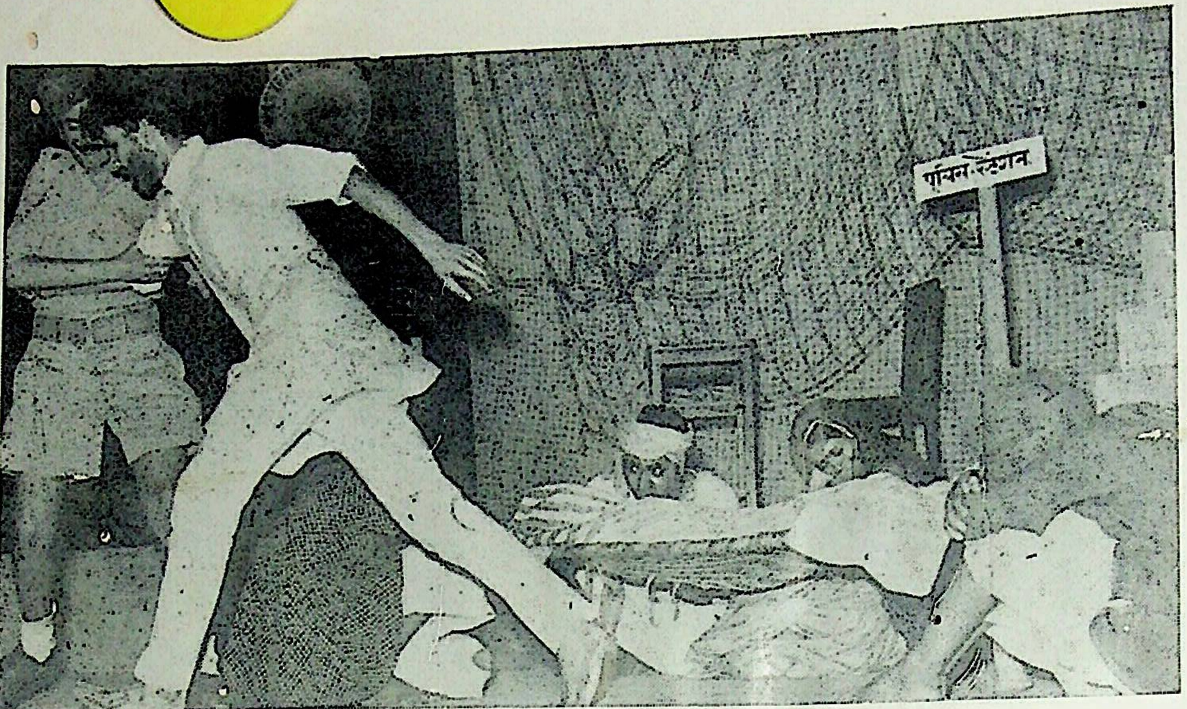
प्रथम प्रस्तुति 'दिशांतर' द्वारा, 1970

निर्देशन : ओम शिवपुरी

स्थान : त्रिवेणी कला संगम, नई दिल्ली



'लड़ाई' के मंचन का एक दृश्य ।



'लड़ाई' के मंचन का एक दूसरा दृश्य ।

लड़ाई

भूमिका दृश्य

उद्घोषक : बत्तीस साल···आज़ादी के बत्तीस साल···लड़ाई खत्म नहीं हुई, जारी है—आलस्य से लड़ाई, उदासीनता से लड़ाई, ढोंग से लड़ाई, जहालत से लड़ाई, गंदगी, बदनीयती, बेइमानी से लड़ाई···लड़ाई खत्म नहीं हुई, जारी है। गरीबी से लड़ाई, मानसिक गुलामी से लड़ाई, औपनिवेशिक संस्कार से लड़ाई, सामंती स्वभाव से लड़ाई···लड़ाई खत्म नहीं हुई जारी है। भाषावाद से लड़ाई, जातिवाद से लड़ाई, धर्मांधता से लड़ाई, क्षेत्रीयता से लड़ाई, लड़ाई खत्म नहीं हुई, जारी है। और, इस लड़ाई में हर आदमी अकेला, आस्था और विश्वास से टूटा हुआ। झूठ के विराट रेगिस्तान में अकेला, अकेला···अकेला ! 'सत्य ही ईश्वर है', महात्मा गांधी ने कहा था, लेकिन कहां है सत्य ? कहां है ईश्वर ?

[कुछ अखबार बेचने वाले ग़रीब बच्चों का मंच पर प्रवेश]

बच्चे : पढ़िए, पढ़िए आज की ताजा खबर—गांव के गांव सूखे की चपेट में। भीषण अकाल···आदमी पेड़ की छाल खा-खाकर जिंदा···सांप्रदायिक दंगे, लाखों की संपत्ति स्वाहा, बर्बरतापूर्ण कत्लेआम,···तस्करी में लाखों का सोना पकड़ा गया···पढ़िए, पढ़िए आज की ताजा खबर ! हरिजन जिंदा जलाए गए, दलबदल की राज-नीति, सरकार बदली, सरकार गिरी, राष्ट्रपति शासन लागू, नक्सलवादियों और पुलिस में टकराव, बम-विस्फोट, गुप्त अड्डे पकड़े गए, विद्यार्थियों पर आंसू गैस, पुलिस पर पथराव, विश्वविद्यालय में पुलिस, स्कूल-कालेज बंद, परीक्षाएं स्थगित, बसें जलाई गईं, संसद और विधानसभा में हंगामा···

उद्घोषक : हिंसा, हंगामा, झगड़े-फ़साद, झूठ और फ़रेब, बेइमानी, धोखाधड़ी, मक्कारी—आखिर कब तक ? वही खबरें, वही सड़ता हुआ समाज। कोई तो लड़े, कोई भी···

[गायक का प्रवेश। वह इकतारे पर गाता है]

गायक : इसी फरेबी दुनिया में है
एक सत्यव्रत का भी नाम।
जिसने सोचा, नहीं आज से
ग़लत करूंगा कोई काम।
खुद भी नहीं करूंगा, औरों
को न ग़लत करने दूंगा।
शुरू लड़ाई हुई अभी से,
हो, जो होना हो अंजाम।

पहला दृश्य

[घर। एक निम्नमध्यवर्गीय परिवार का कमरा। सत्यव्रत (उम्र तीस-चालीस) अखबार पढ़ रहा है और अचानक झटके से उठ बैठता है। गुस्से में अखबार मरोड़ता है। फिर दियासलाई जलाकर अखबार में आग लगा देता है]

सत्यव्रत : बहुत हो चुका। अब मैं सत्य के लिए लड़ूंगा। जो भी हो।

[स्त्री दौड़ती हुई आती और अखबार बुझाती हुई]

स्त्री : (घबराकर) यह क्या कर रहे हो? अख़बार क्यों जला रहे हो?

सत्यव्रत : कुछ नहीं, लड़ाई शुरू हो गई। अब मैं सत्य के लिए लड़ूंगा। न खुद कोई ग़लत काम करूंगा न दूसरे को करने दूंगा।

स्त्री : लोग तुम्हें पागल कहेंगे।

सत्यव्रत : झूठा होने से पागल होना बेहतर है। मैं कायर और ढोंगियों से नफ़रत करता हूं। अक्सर अख़बार कायर और ढोंगियों की वकालत करते हैं। झूठे हैं, बिके हुए

हैं। मैं उनसे निपटूंगा।

स्त्री : हाय ! यह तुम्हें क्या हो गया ! तुम्हारा दिमाग़ कैसे खराब हो गया ? मुसीबत में ही सही; जिंदगी तो किसी तरह कट रही थी। अब कैसे कटेगी ?

सत्यव्रत : मैं नहीं जानता कैसे कटेगी। पर न मैं खुद कोई ग़लत काम करूंगा, न दूसरे को करने दूंगा।

स्त्री : फिर घर का क्या होगा ? बच्चों का क्या होगा ? मेरा क्या होगा ?

सत्यव्रत : जो भी हो, झूठ अब नहीं चलेगा, कुछ भी चलाने के लिए उसका सहारा मैं नहीं लूंगा ! अब तय हो गया।

स्त्री : फिर मुझे मेरे मैके भेज दो।

सत्यव्रत : तुम इस लड़ाई में मेरा साथ नहीं दोगी ?

स्त्री : यह लड़ाई नहीं पागलपन है। मैं पागल नहीं हूं।

सत्यव्रत : तो फिर तुम जाओ। मैं अकेले लड़ूंगा।

स्त्री : बच्चों की फ़ीस जानी है। महीने का राशन लाना है। दूध और रोटीवाले का हिसाब देना है। तुम सत्य के लिए लड़ोगे तो यह लड़ाई कौन लड़ेगा ?

सत्यव्रत : इसी लड़ाई के लिए सत्य की लड़ाई जरूरी है। मेरे बच्चे अब इन गंदे स्कूलों में नहीं पढ़ेंगे। गलत सांचों में नहीं ढलेंगे। मैं ही उन्हें पढ़ाऊंगा। आज से उनका स्कूल जाना बंद।

स्त्री : तो यह तुम्हारा पक्का फैसला है ?

सत्यव्रत : हां।

स्त्री : तो आज शाम मैं बच्चों को लेकर यहां से चली जाऊंगी। सत्य के लिए लड़ने का मतलब सारी दुनिया में आग लगाना नहीं है। बाल-बच्चों को भट्ठी में झोंककर कोई सत्य की लड़ाई नहीं लड़ता। अब इस उमर में तुम्हारा

दिमाग़ खराब हो गया है।

सत्यव्रत : यही सही। और देखो, गलत काम मैं तुम्हें भी नहीं करने दूंगा, न बच्चों को।

[बच्चे का प्रवेश]

बच्चा : पापा, पापा, तुम किससे लड़ोगे ?

सत्यव्रत : हर उस आदमी से जो झूठ बोलेगा, बेइमानी करेगा, दूसरों को सताएगा।

बच्चा : मैं तो झूठ नहीं बोलता।

सत्यव्रत : आज सब झूठ बोलते हैं। सब कुछ झूठ पर चल रहा है…

बच्चा : (घबराकर) पापा, मैं झूठ नहीं बोलता।

सत्यव्रत : बोलते हो, छोटा झूठ बोलते हो क्योंकि छोटे हो। घर-परिवार, समाज, व्यवस्था, राजनीति सब जगह झूठ चल रहा है। मैं हर झूठ के खिलाफ़ लड़ूंगा।

स्त्री : क्या तुम्हारे लड़ने से झूठ खत्म हो जाएगा ?

सत्यव्रत : लड़ाई पहली शर्त है। कौन खत्म होगा यह बाद की बात है…

बच्चा : पापा, मैं झूठ नहीं बोलता, मैं मम्मी के साथ…

स्त्री : (धमकाकर) हूं…

सत्यव्रत : झूठ खत्म नहीं होता हारता है। आदमी हारता नहीं खत्म होता है। महापुरुषों की जीवनियां, और इतिहास इसका गवाह है। (रुककर) मैं जाता हूं।

स्त्री : (शांत पड़ते हुए) मुंह-हाथ धो लो, चाय पी लो, फिर जाना।

[स्त्री जाती है। वह उठ खड़ा होता है। मुंह-हाथ धोने जाता है। पर मंजन की शीशी उठाकर लाता है]

सत्यव्रत : इस मंजन की शीशी पर लिखा है : 'मसूड़ों की रक्षा करता है' मैं वरसों से लगा रहा हूं, मसूड़े ढीले पड़ते जा रहे हैं। झूठे, वेइमान ! मैं यह मंजन नहीं करूंगा। कूड़े में फेंकने लायक है। (फेंक देता है) मैं अभी इस कंपनी को लिखता हूं। इस पर ज़ालसाजी का मुकद्दमा चलाऊंगा। बेइमान !

[कागज़-कलम उठाकर लिखने लगता है। स्त्री चाय लेकर आती है]

स्त्री : यह लो, चाय पी लो।

[डबलरोटी उठाकर सूंघता है]

सत्यव्रत : यह डबलरोटी कव आई ?

स्त्री : रात। पास की बेकरीवाला दे गया था।

सत्यव्रत : (फिर सूंघता है) यह वासी है। सड़ी हुई। इसमें बदबू तक आ रही है। मैं अभी दस आदमियों को दिखाता हूं। उन्हें लेकर बेकरीवाले के पास जाता हूं।

[उठ खड़ा होता है। स्त्री हाथ पकड़ बैठाती है]

स्त्री : रोटी न सही, चाय पी लो।

सत्यव्रत : (चाय का घूंट लेकर) यह तो चीनी की चाय है ?

स्त्री : (खुश होकर) हां।

सत्यव्रत : चीनी कहां से आई ?

स्त्री : पड़ोस से ले ली है। उनके पास हमेशा फालतू रहती है। समझदार आदमी हैं। राशनकार्ड में चार-छह नाम ज्यादा लिखा रखे हैं। ज्यादा लालची भी नहीं हैं। एक किलो पर चार आने ही ज्यादा लेते हैं। दुकानवाला तो ब्लैक में आठ आने ज्यादा लेता है। मैंने वहीं से ले ली। बच्चों से फीकी या गुड़ की चाय नहीं चलती थी। ज़िद करते थे। कोई ग़लत काम तो नहीं किया ?

सत्यव्रत : मैं यह चाय नहीं पीता। यह ग़लत काम है। (चिल्लाकर) यह चोरबाज़ारी है। मैं चोरों से खरीदकर खुद चोर बनना नहीं चाहता। मैं पड़ोसी की रिपोर्ट करूंगा। उसकी तहकीक़ात करवाऊंगा।

स्त्री : उसका कुछ नहीं होगा। राशन का इंसपेक्टर उसका दोस्त है। तुम अगर उससे नहीं लेना चाहते तो खुद अपना राशनकार्ड क्यों नहीं बनवा लेते। महीने-भर से दफ्तर की खाक़ छान रहे हो। यहां इंसपेक्टर आता है। एक दिन चाय पिला देते। जेब में बच्चों की मिठाई के लिए कुछ रख देते। तो चार की जगह बीस का कार्ड आनन-फानन में बनवा लेते; घर में चीनी ही चीनी होती।

सत्यव्रत : बकवास बंद करो। ऐसी बेइमानी की बात यदि तुम्हारे दिमाग़ में आएगी तो मैं तुमसे संबंध त्याग दूंगा।

स्त्री : संबंध रखकर भी क्या सुख दे रहे हो? घर में चूहे लौटते हैं। एक-एक चीज को तरसती हूं। तुमसे कम पढ़े-लिखे, कम काम करके भी आराम की जिंदगी बिताते हैं। अच्छा खाते-पहनते हैं। उनके बच्चे हर चीज़ के लिए मन मारकर नहीं रहते। जब तक मैं हूं गृहस्थी चलाने का जो सही रास्ता है वह जरूर बताऊंगी।

सत्यव्रत : यह सही नहीं, ग़लत रास्ता है।

स्त्री : ग़लत ही सही पर ज़रूरी है। सभी उस पर चलते हैं।

सत्यव्रत : मैं उस पर नहीं चलूंगा, न तुम्हें चलने दूंगा। मैं तय कर चुका हूं।

स्त्री : तुम्हारे तय करने से क्या होता है! जो रास्ता ज़िंदा रहने के लिए ज़रूरी है वही सही रास्ता है। मैं इसे कहूंगी बार-बार कहूंगी। (स्त्री क्रोध से कांपने लगती है,

रोआंसी हो जाती है)

सत्यव्रत : फिर तुम चलो अपने रास्ते पर, मैं जाता हूं।

[उठकर चल देता है]

गायक : घर से निकल सड़क पर आया
लेकिन नहीं जानता था,
यही मोर्चा पहला होगा
ऐसा नहीं मानता था।
बीवी-बच्चे साथ न देंगे
हो जाएगा अकेला वह,
बेगानी दुनिया में खाएगा
रेले पर रेला वह।

दूसरा दृश्य

[सड़क। सत्यव्रत गुस्से में घर से बाहर निकल आता है, और सड़क पर साइकिल पर सवार एक रोटीवाले से टकरा जाता है]

सत्यव्रत : (चिल्लाकर) यह कौन-सा तरीका है सड़क पर चलने का ?

रोटीवाला : अपना रास्ता नापिए सहाब ! बड़े आए तरीका सिखाने वाले !

सत्यव्रत : बाएं से चलना चाहिए या नहीं ? (उसे पहचान कर) ओहो, तुम ही हो। अच्छा हुआ इसी वक्त मिल गए। तुम कल बासी रोटी दे आए मेरे घर यह कहकर कि ताज़ी है। बेइमानी की भी हद होती है !

रोटीवाला : बेइमानी की क्या हद होती है जी ? अगर आपको बासी लगती है तो मत लीजिए, मगर बेइमान-बेइमान कहने की जरूरत नहीं है।

सत्यव्रत : मैं बेइमान को बेइमान कहूंगा।

रोटीवाला : कहकर देखिए।

सत्यव्रत : तुम बेइमान हो।

[रोटीवाला साइकिल एक ओर खड़ी करके उससे

भिड़ जाता है। हाथापाई की नौबत देख लोग बीचबचाव करते हैं]

आदमी-1 : (भीड़ में से) बात तो ठीक है। आपको नापसंद हो तो न लीजिए। लेकिन किसी को बेइमान थोड़े ही कह सकते हैं।

सत्यव्रत : (गुस्से से खीझकर) मैं बेइमान को 'बेइमान नहीं कह सकता ? अरे यह आप सब लोगों को भी ठगता है।

आदमी-2 : कुछ इसे भी ठगते होंगे। भाई जान, हिसाब बराबर !

सत्यव्रत : कोई किसी को न ठगे तो भी तो हिसाब बराबर।

आदमी-3 : हां है तो ! पर जिधर हवा उधर पीठ। ज्यादा तीसमार खां बनेंगे तो राह चलते तुम्हारी जैसी हालत हमारी भी हो जाएगी।

सत्यव्रत : मेरी क्या हालत है ?

आदमी-3 : भई, बताओ इन्हें इनकी क्या हालत है !

[सब लोग हंसते हैं]

आदमी-4 : वह तो तब पता चलता जब अभी हाथ-पैर तुड़वा बैठते।

बुजुर्ग : अरे, शरीफ़ आदमी हैं आप। कहां उलझते हैं ? इस तरह उलझिएगा तो कैसे चलेगा ? कहां तक लड़िएगा ? किस-किस से लड़िएगा ?

सत्यव्रत : तो क्या अन्याय को स्वीकार कर लूं ?

बुजुर्ग : और कर भी क्या सकते हैं ?

सत्यव्रत : क्या शरीफ़ आदमी का काम आंख, कान, मुंह बंद करके रहना है ?

रोटीवाला : जी नहीं, दूसरों को झूठा और बेइमान बताना है !

[सब लोग हंसते हैं]

बुजुर्ग : क्या फ़ायदा इस बहस से ? आज शरीफ़ आदमी सच-

मुच आंख, कान, मुंह बंद करके रहता है।

सत्यव्रत : शरीफ़ आदमी, या कायर आदमी ?

बुज़ुर्ग : आपने ठीक फरमाया। अब चुप कीजिए।

[सब हंसते हुए अपने-अपने रास्ते चल देते हैं]

रोटीवाला : (साइकिल उठा चलते हुए) खुश हो गए आप ? साले। (आवाज़ लगाता है) ताज़ी रोटी !

गायक : ग़लत को ग़लत कहने में भी
दुनिया यहां रोकती है,
दुर्बल होकर सच्ची बात
कहो तो तुम्हें टोकती है।
आगे चले सत्यव्रत तो वह
जा पहुंचे स्कूल में,
सोचा, सभी बुराई की जड़
है शिक्षा के मूल में।

तीसरा दृश्य

[स्कूल । प्रिंसिपल बैठे हैं । सत्यव्रत प्रवेश करता है]

सत्यव्रत : मैं सत्यव्रत शर्मा हूं, अतुल शर्मा का पिता । वह आपके स्कूल में दूसरी कक्षा में पढ़ता है ।

प्रिंसिपल : हां, कहिए ।

सत्यव्रत : स्कूल में अपनी किताबें चोरी चले जाने की शिकायत मेरे बच्चे ने आपसे की । आपने उसकी शिकायत सुनने से इनकार कर दिया । कहा कि अंग्रेज़ी में कहो तब तुम्हारी बात सुनी जाएगी । यह कौन-सा तरीका है ? शिकायत तो अपनी भाषा में आप सुन ही सकते थे ।

प्रिंसिपल : देखिए साहब ! स्कूल के मामले में आप इंटरफियर न करें । यह हमारा डिसिप्लिन का मामला है । आप गार्जियन लोग ही डिसिप्लिन बिगाड़ते हैं ।

सत्यव्रत : अपनी भाषा में बात कहने से डिसिप्लिन बिगड़ती है ?

प्रिंसिपल : खाली लैंग्वेज की बात नहीं और भी बहुत-सी बातें होती हैं ।

सत्यव्रत : मैं खाली भाषा की बात कह रहा हूं । आपका स्कूल इंग्लैंड में नहीं है हिंदुस्तान में है । आप भी इंग्लैंड से

नहीं आए हैं। यहीं के हैं। अपनी भाषा में आप शिकायत नहीं सुन सकते ?

प्रिंसिपल : बाबा ! उसमें और भी बातें होती हैं।

सत्यव्रत : और क्या बात होती है ? अंग्रेजी में अपनी बात न कह पाने की तकलीफ़ आप बच्चे में जगाना चाहते हैं । अपनी भाषा में अपनी बात कहकर अपना काम करा लेने का संतोष आप उसमें नहीं जगाना चाहते ।

प्रिंसिपल : यह शिक्षा की बात है, आप नहीं समझेंगे । (हंसता है)

सत्यव्रत : यह शिक्षा की नहीं, शिक्षा के नाम पर नई पीढ़ी को नपुंसक बनाने की जालसाज़ी है । इसे मैं समझता हूं । चंद पैसेवाले बच्चों को आप ऊपर उठाना चाहते हैं । उन्हीं को बढ़ाना चाहते हैं । कम आमदनी वाले ग़रीब घरों के बच्चों को, जिनके माता-पिता न मंत्री हैं, न पैसे वाले हैं, न बड़े-बड़े ओहदों पर हैं, उन्हें आप नीचे दबाना चाहते हैं । हर तरह से दबाते हैं । जब वे निराश होते हैं, घबराते हैं, बेचैन होते हैं क्योंकि अपना भविष्य अंधकारमय देखते हैं, तो आप उसे अनुशासनहीनता, विद्रोह, जाने क्या-क्या कहते हैं । मैं इतना समझता हूं ।

प्रिंसिपल : अगर आप इतना समझते हैं तो अपना स्कूल क्यों नहीं खोल लेते ?

सत्यव्रत : यह स्कूल हमारा ही है । सरकार और जनता के पैसे पर चलता है ।

प्रिंसिपल : और सरकार और जनता ने इस काम के लिए हमें रखा है । शिक्षा के कानून, नियम बनाकर हमें दिए हैं । उनके तहत हम काम करते हैं ।

सत्यव्रत : शिक्षा कानून में अंग्रेजी में ही शिकायत सुनने की बात···

प्रिंसिपल : हां, यह हमारा नियम है। शिक्षा के लिए हमारा अनुशासन का अपना ढंग है। आपको यदि हमारा अनुशासन पसंद नहीं है तो अपने बच्चे को स्कूल से हटा सकते हैं। किसी सड़ियल स्कूल में डाल सकते हैं, जहां वह आपके हिसाब से ज्यादा तरक्की करे। आपका बच्चा यूं भी कमजोर है। देखिए, शायद और कहीं दाखिला हो जाए। इससे ज्यादा मैं और क्या कह सकता हूं। आप कल अपने बच्चे को हमारे स्कूल से निकाल ले जा सकते हैं। नमस्कार। मुझे और काम है।

[प्रिंसिपल उठकर जाने लगता है]

सत्यव्रत : (खड़ा हो जाता है जाने के लिए) ले जाऊँगा, जरूर ले जाऊंगा। आप जैसी शिक्षा देते हैं उससे अनपढ़ बच्चे भले। आप सब 'अच्छे स्कूल' इसीलिए कहे जाते हैं कि विदेशी भाषा के गुलाम हैं, और यही गुलामी सिखाते हैं!

[दोनों का दो दिशाओं में प्रस्थान]

गायक : बहरे कान सभी के
कोई नहीं सत्य सुनने वाला।
लेकिन बुनियादी बातों को
कैसे जा सकता टाला।
सोच सत्यव्रत यही, खड़ी
बस में जा तुरत सवार हुए।
राशन दफ्तर जाएंगे
थे जिससे वह बेज़ार हुए।

चौथा दृश्य

[बस में। एक आदमी कंडक्टर को पैसे दे, बिना टिकट लिये जाने लगता है]

सत्यव्रत : टिकट दो उसे।

कंडक्टर : टिकट दे दिया।

सत्यव्रत : नहीं दिया, मैं देख रहा था।

कंडक्टर : खाक देख रहे थे आप।

सत्यव्रत : तुमने टिकट नहीं दिया पैसे लिये हैं।

कंडक्टर : जबान संभालकर बोलिए। पैसे आपके बाप ने लिए होंगे। पूछ लीजिए इससे अभी उतरा नहीं है।

वह आदमी : (मुस्कराकर) टिकट तो साल-भर पहले ले चुका हूं। (उतर जाता है)

कंडक्टर : देख लिया आपने ?

सत्यव्रत : मैंने सब देख लिया है। मैं आगे तेरी जांच कराऊंगा।

कंडक्टर : जा-जा, तेरे जैसे बहुत देखे हैं! बड़ा आया जांच कराने वाला! तेरी तरह यहां चोर नहीं बसते।

सत्यव्रत : चोर तुम हो।

कंडक्टर : ज़बान खींच लूंगा! (गरदन पकड़ लेता है)

यात्री-1 : जब टिकट लेने वाला कह रहा है कि उसने टिकट लिया

है तो आप क्या कर सकते हैं ?

[इंसपेक्टर आता है]

सत्यव्रत : इंसपेक्टर आ गया, मैं तेरी शिकायत करूंगा।

इंसपेक्टर : क्या बात है ?

सत्यव्रत : यह कंडक्टर गड़बड़ आदमी है। पैसे जेब के हवाले करता है, टिकट नहीं देता।

इंसपेक्टर : क्या आपको इसने टिकट नहीं दिया ?

सत्यव्रत : नहीं, मुझे तो दिया। पर पिछले स्टाप पर एक आदमी के यह पैसे खा गया।

इंसपेक्टर : (मुस्कराकर) क्यों भई ! क्या बात है ?

कंडक्टर : बाबू साहब का दिमाग खराब है। और लोग हैं, पूछ लीजिए।

और लोग : दिया है साहब, टिकट इसने। (हंसते हैं)

इंसपेक्टर : (सत्यव्रत से) क्यों साहब आप तो कहते थे···

सत्यव्रत : मैंने अपनी आंखों से देखा है।

कंडक्टर : अपनी आंखों का इलाज कराइए वरना कोई आंखें निकाल लेगा।

इंसपेक्टर : सरकारी कर्मचारियों के काम में बाधा डालना और उनसे लड़ना भी जुर्म है, यह आप जानते हैं।

सत्यव्रत : हां जानता हूं, लेकिन उनके ग़लत काम की शिकायत करना फर्ज़ है यह भी जानता हूं। आप उसके अफ़सर हैं, इसलिए शिकायत कर रहा हूं।

इंसपेक्टर : पर कोई सबूत भी हो।

सत्यव्रत : मैंने देखा है।

इंसपेक्टर : और लोगों ने इसका उल्टा देखा है।

आदमी-2 : (तैश से) क्या सबूत है आपके पास ?

[सत्यव्रत चुप रहता है]

सत्यव्रत : सबूत तो आप थे…

कंडक्टर : (पास आकर) घर से लड़कर चले हो ? शरीफ़ आदमी हो शरीफ़, आदमियों की तरह रहो !

सत्यव्रत : यानी ग़लत काम देखूं, चुप रहूं और यदि बोलने को कहा जाए तो झूठ बोलूं…

[कंडक्टर आगे बढ़ने के बहाने धक्का मारता है। सब मुस्कराते हंसते हैं]

गायक : राशन दफ्तर पहुंचे वह
जो है सबसे ज़्यादा बीमार,
चोरी, घूस, निकम्मेपन का
जहां लगा रहता दरबार।
भूखा और लाचार आदमी
उससे नित टकराता है,
अन्न दूसरे ले जाते हैं
और वह कंकड़ खाता है।

पांचवां दृश्य

[राशन दफ्तर। स्टूल पर बैठा एक चपरासी ऊंघ रहा है। भीतर गपशप हो रही है। सत्यव्रत बैठा हुआ है]

सत्यव्रत : (चपरासी से) चपरासी जी, मेरा समय फालतू नहीं है। मैं घंटे-भर से बैठा हूं। भीतर जाकर कह दो, पहले जनता का काम करें, फिर बात करें।

चपरासी : कायदे से बात कीजिए, इतनी ज़ोर से बोलने की जरूरत नहीं है।

सत्यव्रत : कायदा केवल मेरे लिए है। दूसरों के लिए नहीं ?

चपरासी : सबके लिए है। साहब काम कर रहे हैं।

सत्यव्रत : साहब काम कर रहे हैं ! मैं बेकार बैठा हूं। मैं खूब जानता हूं, भीतर गप्प मारी जा रही है।

चपरासी : बड़े साहब आए हैं, मीटिंग हो रही है।

सत्यव्रत : मीटिंग या चीटिंग ?

चपरासी : (त्योरी चढ़ाकर) उल्टी-सीधी बात मत कीजिए। यह सरकारी दफ्तर है, हंसी-खेल नहीं।

सत्यव्रत : आप लोगों ने हंसी-खेल बना रखा है। जनता परेशान होती है।

चपरासी : चुप करते हो या नहीं? बड़े आए जनता वाले ! महात्मा गांधी बने हैं ! खूब जानता हूं तुम लोगों को।

सत्यव्रत : तुम कुछ नहीं जानते। तुम तो वही जानते हो जो तुम्हें सिखाया गया है।

चपरासी : मैं सब जानता हूं।

सत्यव्रत : (ज़ोर से) क्या जानते हो ? क्या जानते हो तुम ?

[अधिकारी शोर सुनकर बाहर आ जाता है]

अधिकारी : क्या बात है ?

चपरासी : यह आदमी···

सत्यव्रत : हां मैं···

अधिकारी : क्या चाहते हैं आप ?

सत्यव्रत : आपसे कुछ बात करना चाहता हूं।

अधिकारी : बताइए।

सत्यव्रत : पिछले एक महीने से मेरा राशनकार्ड पड़ा हुआ है। दफ्तर के लोग घूस चाहते हैं। नहीं बना रहे हैं।

अधिकारी : आपके पास क्या सबूत है कि घूस चाहते हैं ?

सत्यव्रत : फिर क्यों नहीं बना रहे हैं ? महीने से ऊपर हो गया।

अधिकारी : कोई बात होगी ही। आप अपनी शिकायत लिखकर शिकायत पेटी में डाल जाइए। मैं देख लूंगा।

सत्यव्रत : शिकायत पेटी में शिकायत लिखकर कई बार डाल चुका हूं। पर कुछ नहीं हुआ। शिकायत पेटी धोखे की टट्टी है। फरेब है। काम न करने का, टालने का बहाना है।

अधिकारी : चपरासी ! आपसे शिकायती चिट्ठी लेकर शिकायत पेटी में डलवा दो। उस पर भी हंगामा करे तो दफ्तर के बाहर निकाल दो।

[अधिकारी लौट जाता है]

सत्यव्रत : शिकायत की पेटी यहां ताबूत है जिसमें हर चीज जाकर

दफ़नाने के लिए लाश में बदल जाती है... लेकिन मैं कुछ दफ़न नहीं होने दूंगा ।

[चीखते सत्यव्रत को चपरासी खींचता बाहर ले जाता है]

गायक : सोचा लोकतंत्र है यह
जिसका प्रहरी अखबार है,
उस पर इस भोली जनता का
जो भी हो एतबार है।
यही सोच सत्यव्रत पहुंचता है
दफ़्तर अखबार के,
जहाँ उसे पड़ते हैं कोड़े
और झूठ की मार के।

छठा दृश्य

[अखबार का दफ्तर। दैनिक 'सत्यपथ'। संपादक कुरसी-मेज लगाए बैठे हैं]

सत्यव्रत : संपादकजी, मैं एक पत्र राशन दफ्तर के खिलाफ़...

संपादक : (आंख उठाकर) अरे सत्यव्रत, तुम ! खूब आए। हम 'सत्यपथ' का विशेषांक निकालने जा रहे हैं। स्वतंत्रता के बाद के भारतीय समाज की प्रगति पर तुम्हारा एक लेख चाहिए।

सत्यव्रत : मैं राशन अधिकारी के खिलाफ़ एक पत्र छपवाना चाहता हूं।

संपादक : किसके ? भार्गव के ? क्या हुआ ? मुझे बताओ अपना यार है।

सत्यव्रत : मैं तुम्हारे यारों की सूची जानता हूं।

संपादक : इतने नाराज़ क्यों हो ? बैठो। अभी मिनटों में तुम्हारा काम कराता हूं। बस तुम एक लेख...

सत्यव्रत : धन्यवाद। खाली मेरा काम होने से क्या होगा, हज़ारों आदमी जब परेशान होते हों। मैं तुम्हारे पास सिफ़ारिश के लिए नहीं आया हूं, शिकायत लेकर आया हूं। अखबार लोकतंत्र के पहरेदार हैं। तुम्हें जगाना चाहता हूं।

संपादक : भई, शांत होग्रो। काम तो बताग्रो। चिट्ठी भी छप जाएगी। उसे पता नहीं चला होगा कि तुम लेखक हो। ग्रन्यथा मिनटों में काम करता। शरीफ़ ग्रादमी है। लेखकों ग्रादि का बड़ा ख्याल रखता है।

सत्यव्रत : मैं एक नागरिक के रूप में ग्रपना ग्रधिकार चाहता हूं, कोई रियायत नहीं। तुम मेरी चिट्ठी छापो।

संपादक : चिट्ठी दे दो। उससे पहले ही तुम्हारा काम हो जाएगा। क्या राशन कार्ड का मामला है? कल सवेरे तुम्हारे घर पहुंच जाएगा। निश्चित रहो। ग्रभी टेली-फोन करता हूं। हां, तो मेरे लिए एक लेख···

सत्यव्रत : चिट्ठी छापोगे या नहीं? साफ़ जवाब दो।

संपादक : क्यों नहीं? 'सत्यपथ' है किसलिए? पर तुम्हारा काम तो कल हो जाएगा।

सत्यव्रत : फिर भी मैं···

संपादक : (बात काटकर) हां, हां, कह तो दिया, कल की वात कल। हां, तो स्वतंत्रता के बाद के भारतीय समाज की प्रगति पर एक ग्रच्छा-सा लेख लिख दो। व्यवस्था की ज्यादा कड़वी ग्रालोचना न करना। विज्ञापनों का सिलसिला शुरू होने वाला है।

सत्यव्रत : तुम ग्रपनी पत्रिका का नाम बदलकर 'ग्रसत्यपथ' रख दो। तभी मैं उसमें लिख सकूंगा।

संपादक : तुम नाराज़ हो जाते हो। पत्रिका की ग्रार्थिक स्थिति भी तो ठीक करनी है। हम किसी को नाराज़ नहीं कर सकते। लिख दो लेख, क्या फ़रक पड़ता है? ग्राखिर स्वतंत्रता के बाद कुछ तो प्रगति हुई है?

सत्यव्रत : हां, जरूर हुई है। लेकिन इतनी, ही कि लोग खुद को ग्रौर दूसरों को ग्रौर ग्रधिक ठगना सीख गए हैं। चोरी,

मक्कारी, झूठ-फरेब सबके भाव चढ़े हैं और लोग उन पर आदर्शों का अच्छे से अच्छा लेबिल लगाना सीख गए हैं।

संपादक : यह सब लिखो। यह सब लिखने को हम कब मना करते हैं। 'सत्यपथ' है ही इसलिए कि सत्य कहा जाए। मेरा अनुरोध केवल इतना था कि व्यवस्था पर सीधा आक्रमण न किया जाए। तुमने तो इतने दिनों पत्र-कारिता की है तुम्हें क्या बताना !

सत्यव्रत : सीधा आक्रमण क्यों न किया जाए ? विज्ञापन नहीं मिलेंगे इसलिए ? मैं नहीं लिखूंगा। इतना ही नहीं आपकी पत्रिका बिकी हुई है, इसका अधिक से अधिक प्रचार करूंगा।

संपादक : यहां बिका कौन नहीं है ? आप भी बिके हैं, हम भी बिके हैं, सारा देश बिका है। बिकना ही यहां टिकना है।

सत्यव्रत : लेकिन हमारा फर्ज उसके खिलाफ़ आवाज उठाना है।

संपादक : कौन सुनता है ? किसको किसके लिए सुनाना है ? तुम किस दुनिया में रहने लगे हो ?

सत्यव्रत : लेकिन तुम अपने पत्र पर 'सत्यमेव जयते' लिखते हो। पर क्या यह नहीं मानते कि अंत में सत्य की विजय होगी ?

संपादक : 'सत्यमेव जयते' तो सारा देश लिखता है, कहां 'सत्यमेव जयते' नहीं लिखा है···

सत्यव्रत : और सत्य वह ढाल है जिसे लेकर हर जगह झूठ की लड़ाई लड़ी जा रही है। आजादी के बाद यही हमने सीखा है। यही सिखाया गया है। यह भी कहो···

[सत्यव्रत जाता है]

संपादक : जा रहे हो ?

सत्यव्रत : तुम लोग जाने किस दौड़ में हो ? शायद झूठ को दौड़-कर चलने की आदत है। उसमें धैर्य नहीं होता, वह जल्दी मंजिल पा लेना चाहता है। तुम अख़बारवाले भी उसी दौड़ में शामिल हो। (प्रस्थान)

गायक : बहुत तिलमिलाकर निकला वह
लेकिन हुई न डगमग चाल,
लोकतंत्र के पहरेदारों का
देखा है बहुत कमाल।
उतर सड़क पर आए जब
तब देखा अस्पताल का रंग,
जहां ग़रीबों की हत्या का
अजब निराला ही है ढंग।

सातवां दृश्य

[अस्पताल। फाटक के बाहर एक चारपाई पर रज़ाई ओढ़े एक बीमार व्यक्ति लेटा हुआ है। तीन ग्रामीण सिर झुकाए बैठे हैं। एक औरत घूंघट काढ़े सिसकियां भर रही है]

ग्रामीण-1 : काहे रोती हो, जो भाग्य में होगा वह तो भुगतना ही है।

सत्यव्रत : क्या बात है भाई ?

ग्रामीण-2 : यह बीमार हैं।

सत्यव्रत : तो अंदर अस्पताल में क्यों नहीं ले जाते ?

ग्रामीण-3 : वहीं ले गए थे, दवा दे दी, भरती नहीं किया।

सत्यव्रत : क्या कहा ?

ग्रामीण-1 : कहिन जगह नहीं है।

सत्यव्रत : क्या हुआ इसे ?

औरत : बोखार है। बीच-बीच में बेहोश होय जात हैं।

सत्यव्रत : मैं बात करता हूं। भरती कैसे नहीं करेंगे।

[अस्पताल के भीतर जाता है। डाक्टर बैठा है]

सत्यव्रत : (डाक्टर से) डाक्टर साहेब, बाहर वह मरीज पड़ा है। आपने भरती क्यों नहीं किया ?

डाक्टर : आप उसके कौन हैं ?

सत्यव्रत : कोई नहीं ।

डाक्टर : आप किसी सेवा संस्था या किसा राजनैतिक पार्टी के आदमी हैं ?

सत्यव्रत : मैं केवल आदमी हूं। क्या सही बात कहने के लिए किसी संस्था या पार्टी का होना जरूरी है ?

डाक्टर : इस मरीज़ को हम भरती नहीं कर सकते ।

सत्यव्रत : क्यों ?

डाक्टर : जगह नहीं है ।

सत्यव्रत : बीमार और मरते आदमी के लिए यदि अस्पताल में जगह नहीं होगी तो और कहां होगी ?

डाक्टर : मजबूरी है ।

सत्यव्रत : ठीक है। मरीज़ यहीं है। जब जगह खाली हो दे दीजिएगा। आखिर ये लोग अपने गांव से न जाने कितनी दूर से चलकर आए हैं। अनपढ़ हैं, गरीब हैं। शहर में मरता हुआ आदमी लिये कहां जाएंगे ?

डाक्टर : आप क्यों उनकी वकालत कर रहे हैं ? हम भी अपना फ़र्ज़ जानते हैं। रोज़ न जाने कितने ऐसे मरीज़ आते हैं। किस मरीज़ के साथ क्या करना है हम जानते हैं।

सत्यव्रत : आप कुछ नहीं जानते। अपना फ़र्ज़ भी नहीं।

डाक्टर : ठीक है। जब हम कुछ जानते ही नहीं तो आप क्यों यहां खड़े हैं, चले जाइए !

सत्यव्रत : मैं जाऊंगा नहीं। यहीं रहूंगा। किसी दूसरे आदमी को भरती किया तब आपको देखूंगा।

डाक्टर : आप जाकर बाहर तशरीफ़ रखिए, शोर मत मचाइए।

[टेलीफोन की घंटी बजती है]

डाक्टर : हलो ! कौन ? ओह आप। यस सर ! भेज दीजिए

भरती कर लेंगे। थोड़ा आराम जरूरी है। जी हां।
नर्स ! (आवाज़ देता है)

नर्स : यस डाक्टर।

डाक्टर : बेड नं० सत्रह ठीक कर दीजिए। मिनिस्टर साहब का आदमी आ रहा है।

नर्स : यस डाक्टर। (जाती है)

सत्यव्रत : पहले यह आदमी भरती होगा, मिनिस्टर का नहीं।

डाक्टर : आप जाते हैं या नहीं ? अस्पताल के काम में दखल मत दीजिए।

सत्यव्रत : मैं देखता हूं आप उसे कैसे भरती करते हैं।

[तभी गांववालों का रोना। स्त्री मृत शरीर पर गिरकर रोती है। सत्यव्रत बाहर आता है]

सत्यव्रत : मर गया। ये अस्पताल वाले हत्यारे हैं। इस बेचारे की हत्या इन्होंने की है। (गांव वालों से) अब क्या करोगे ? लाश को गांव ले जाओगे ?

ग्रामीण-1 : क्या करें, साहब। शहर में पता नहीं कोई जलाने भी दे या नहीं। फिर यहां लायक पैसा नहीं है। हे राम…

[कंधों पर चारपाई उठा जाने लगते हैं, तभी दो आदमियों के साथ मिनिस्टर साहब का आदमी आता है]

डाक्टर : (लपककर) आइए, आइए सर। आपका बेड ठीक है। नर्स ! (आवाज़ देता है)

सत्यव्रत : आपको यह बेड एक ग़रीब आदमी की जान लेकर दिया जा रहा है। मैं लोगों को इकट्ठा करूंगा। अस्पताल की ईंट से ईंट बजा दूंगा।

[ग्रामीण चारपाई लिये जाते हैं]

मिनिस्टर का आदमी : यह कौन है ? विरोधी दल का है क्या ?

सत्यव्रत : दल का नहीं केवल विरोधी हूं, इस तरह की ग़लत बातों का, जहां एक आदमी की जान से ज्यादा जरूरी दूसरे आदमी का आराम है।

डाक्टर : नर्स ! पुलिस को बुलाओ, यह आदमी पागल है।

सत्यव्रत : अच्छे डाक्टर हो ! पागलपन पहचानते हो, मरता आदमी नहीं पहचानते !

डाक्टर : (अनसुनी करके मिनिस्टर के आदमी से) चलिए सर।

सत्यव्रत : मैं इन्हें नहीं जाने दूंगा, नहीं जाने दूंगा। एक मरते आदमी का हक़ छीनकर···

[पुलिस का प्रवेश। पीछे से आकर दो सिपाही उसे पकड़ लेते हैं]

सत्यव्रत : मुझे छोड़ दो, मुझे छोड़ दो। तुम सच्चाई का गला घोंट रहे हो।

पुलिस : बकवास बंद कर ! (एक बेंत मारता है)

सत्यव्रत : यह बकवास नहीं है, सत्य है···

पुलिस : तेरी सत्यवादी की···थाने चल ! फसाद खड़ा करता है !

सत्यव्रत : वह आदमी मर गया इनकी···

पुलिस : (बात काटकर खींचते हुए) अभी तू भी मरेगा।

गायक : छोड़ा नहीं पुलिस ने उसको
बांध ले गई थाने पर,
गर्व उसे था इक ग़रीब की
पीड़ा को अपनाने पर।
हैं आराम सभी फ़रमाते
दीन-हीन की लाशों पर,
फिर भी आंच नहीं आती है
क्यों इनके विश्वासों पर ?

आठवां दृश्य

[थाना। दरोगा बैठा है। सिपाही सत्यव्रत को लेकर आते हैं]

दरोगा : क्यों मिस्टर, क्या बात है ?

सत्यव्रत : दरोगा, साहब, आप लोग सत्य की रक्षा नहीं करते।

दरोगा : सत्य की रक्षा करना हमारा काम नहीं है। हम शांति और व्यवस्था की रक्षा करते हैं।

सत्यव्रत : फिर सत्य की रक्षा कौन करेगा ?

दरोगा : (व्यंग्य से) सत्य में बड़ी पावर है। वह अपनी रक्षा आप कर लेगा। तुम अब हंगामा न खड़ा करने का वादा करो तो तुम्हें छोड़ा जा सकता है। शक्ल-सूरत तो भले आदमियों की है।

सत्यव्रत : सत्य के लिए बोलना यदि हंगामा खड़ा करना है तो मैं हज़ार बार करूंगा। तुम लोग सब झूठ का साथ देते हो। तुम केवल जो बड़े हैं, समर्थ हैं, उनके लिए हो, जिससे कि वह तुम्हारे बल पर अपना झूठ चला सकें।

दरोगा : उपदेश की जरूरत नहीं है तुम्हारे। इसका जवाब हमारे पास डंडा है। साफ बोलो, तुम यहां हवालात में रहना चाहते हो या जाना चाहते हो ?

सत्यव्रत : मैं यहां अपनी खुशी से नहीं आया हूं। तुम लोग ग़ैर कानूनी ढंग से मुझे यहां लाए हो। अपनी बात कहने का अधिकार हमें है। तुम मेरा यह अधिकार छीन नहीं सकते। देश में लोकतंत्र है तानाशाही नहीं। पर तुम लोगों ने तानाशाही मचा रखी है।

दरोगा : तुम्हारी ज़बान बंद नहीं होगी ? उसकी तानाशाही चलेगी ?

सत्यव्रत : ज़बान की तानाशाही नहीं होती।

दरोगा : (पुलिस से) आदमी खब्ती लगता है।

सिपाही : नहीं सर। छंटा बदमाश है। इसे जाने कैसे पता चल गया कि मिनिस्टर साहब आने वाले हैं। पर खैरियत हुई वह नहीं आए। इसकी उनपर हमला करने की नीयत थी।

दरोगा : क्यों मिस्टर, यह है आपका सत्य ?

सत्यव्रत : यह मेरा नहीं आप लोगों का सत्य है।

दरोगा : हमारे हलके में गुंडागिरी नहीं चलेगी।

सत्यव्रत : गुंडागिरी आपके सिपाहियों ने की है मैं···

दरोगा : (बात काटकर चिल्लाता है) ज़बान लड़ाता है ! इसे इक्कीस बेंत लगाकर थाने से बाहर फेंक दो।

सत्यव्रत : पुलिस को मुझे मारने का कोई हक़ नहीं है।

दरोगा : तेरी हक़ की···सारा हक़ तुझे ही है साले ! ले जाओ इसे !

[सिपाही उसे मारते, ले जाते हैं]

गायक : मार पुलिस की तन पर खाई
मन पर पड़ी सड़क की मार,
जहां ग़रीबों, बदमाशों का
चलता है विचित्र व्यापार।

चोरी, ठगी, भीख, आवारागर्दी
सबके हुए शिकार,
चारों तरफ़ उपेक्षा पाई
चारों तरफ़ मिली दुत्कार।

नवां दृश्य

[सड़क पर। सत्यव्रत मार खाकर नीमबेहोश पड़ा है। एक बदमाश आदमी उसके पास आकर खड़ा हो जाता है। ठिगना क़द, शराब पिए।]

बदमाश : (हंसकर) थाने में मार पड़ी है ?

सत्यव्रत : हां। पुलिस को मारने का कोई हक़ नहीं।

बदमाश : चोट ज्यादा लगी है ?

सत्यव्रत : नहीं (कराहता उठता है)

बदमाश : चोरी की थी ?

सत्यव्रत : नहीं, नहीं।

बदमाश : फिर क्या किया था ?

सत्यव्रत : सच बोला था।

[बदमाश हंसता है]

बदमाश : तब तो तुम सबसे बड़े बदमाश हो। लगता है तुम भूखे हो। तुम्हें मदद की जरूरत है। मेरा एक काम करोगे ? मेरा यह थैला लेकर तुम थोड़ी देर, केवल आधे घंटे यहां पड़े रहो। आधे घंटे बाद मेरा एक आदमी आकर इसे ले जाएगा। तुम्हें कुछ पैसे भी वह दे जाएगा। कहां से आए हो ?

सत्यव्रत : कहीं से नहीं। इसी शहर में रहता हूं।

बदमाश : कभी दीखे नहीं। मैं शहर के सभी बदमाशों को जानता हूं। बहरहाल इतना काम करो। कुछ लोग मेरा पीछा कर रहे हैं। तुम पर कोई शक़ नहीं करेगा।

[बदमाश थैला रखकर जाने लगता है]

सत्यव्रत : इसमें क्या है ?

बदमाश : अफ़ीम है।

सत्यव्रत : मैं इसे नहीं रखूंगा। मैं चोर-बदमाश नहीं हूं। मैं अभी चिल्लाऊंगा कि तुम तस्करी करते हो। तुम्हारे पास अफ़ीम है।

बदमाश : चिल्लाएगा तो यह ले···साला !

[उसे ज़ोर का धक्का देता है और थैले के साथ रफूचक्कर हो जाता है। सत्यव्रत गिर पड़ता है, कराहने लगता है। एक भिखारी का प्रवेश]

भिखारी : दे दाता के नाम पर, दे ईश्वर के नाम पर। हें हें हें, अरे ! (सत्यव्रत से) तुम कौन हो ? तुम्हें यह पजामा-कमीज कहां से मिल गई ?

सत्यव्रत : मेरी अपनी है।

भिखारी : तुम भीख नहीं मांगते ?

सत्यव्रत : मांगता हूं। दूसरों के लिए अक्ल की भीख।

भिखारी : घर नहीं है ?

सत्यव्रत : है।

भिखारी : यहां क्यों पड़े हो ?

सत्यव्रत : पड़ा नहीं हूं, दूसरों को उठाना चाहता हूं।

भिखारी : भीख नहीं मांगते तो यहां से उठ जाओ। यह हमारी जगह है। अभी सारी टोली आती होगी। एक सेठ शाम को आता है। सबको रोटी बांटता है।

[कुछ और भिखारी आते हैं]

भिखारी-1 : (दूसरों से) एक और आदमी आ गया।

भिखारी-2 : हमारी रोटी में हिस्सा बटाने आया है।

भिखारी-1 : (व्यंग्य से) भीख नहीं मांगता। कुरता-पजामा अपना है, अपना घर है।

भिखारी-1 : देख वे देख, सेठ जी आ रहे हैं।

[भिखारी लपकते हैं। भगदड़। सेठ जी का प्रवेश। सब उन्हें घेर लेते हैं। सेठ का नौकर रोटी बांटता है। 'जय हो धर्मात्मा की', 'जय हो सेठानी जी की!' भिखारी चिल्लाते हैं। धक्कम धुक्का में रोटियां गिर जाती हैं। सब झपटते हैं]

सेठ जी : आराम से, आराम से।

नौकर : पीछे हटो कमबख्तो। कुत्तों की तरह लड़ो मत! निकलने दो भाई।

[सेठ जी नौकर सहित वापस लौटते हैं]

सत्यव्रत : (उठकर चिल्लाता है) मैं तुम्हें भीख की रोटी नहीं खाने दूंगा। यह रोटी चोरबाज़ारी से कमाए पैसे की है।

भिखारी-1 : रोटी रोटी है।

भिखारी-2 : हमें इससे कोई मतलब नहीं।

भिखारी-1 : हमारे पास अपना कुरता-पाजामा नहीं, न घर है जो मतलब हो।

सत्यव्रत : अरे बेशरमो! भीख की रोटी मत खाओ। मेहनत-मजदूरी करो।

भिखारी-1 : तुम्हारे घर चलें? काम दोगे? (हंसता है)

सत्यव्रत : भीख की रोटी मत छुओ। इससे अच्छा है मारो और मर जाओ। मैं तुम्हें भीख की रोटी नहीं खाने दूंगा।

[खाते हुए दूसरे भिखारी का हाथ पकड़ता है]

भिखारी-1 : सभी भीख की रोटी खाते हैं, मैं क्यों न खाऊं ?

सत्यव्रत : मैं भीख की रोटी नहीं खाता। कोई भी···

भिखारी-1 : सारा देश भीख की रोटी खाता है। चुप कर नहीं तो हड्डी-पसली एक कर दूंगा। सीधे चला जा यहां से। जानता नहीं मुझे मैं भिखारी यूनियन का सिक्रेटरी हूं।

भिखारी-2 : छोड़ यार ! मंदिर पर जाने का समय हो रहा है। (सब से) चलो, चलो।

[सब उसे घूरते हुए चल देते हैं। एक चाटवाला सिर पर खोमचा रखे आता है]

चाटवाला : चटपटी चाट, पानी के बताशे !

सत्यव्रत : सामान को ढंककर रखो, गंदगी मत बेचो।

चाटवाला : तुम नये इंसपेक्टर लगे हो ?

सत्यव्रत : आखिर जब ढंकने का इंतज़ाम है तब ढांकते क्यों नहीं ?

चाटवाला : आपको खाना हो तो बोलिए, कानून मत बघारिए।

सत्यव्रत : यदि सफ़ाई से रखा होता, खाता।

चाटवाला : आप जैसे खानेवाले बहुत देखे हैं। खानेवाला खाता है, सफ़ाई-गंदगी नहीं देखता।

सत्यव्रत : फिर क्या देखता है ?

चाटवाला : मिर्च-मसाला देखता है।

सत्यव्रत : हज़म कैसे होता है ?

चाटवाला : सब हज़म हो जाता है। दुनिया का पेट बहुत बड़ा है··· चाट, चटपटी चाट !

[चाटवाला आवाज़ लगाता चला जाता है। उधर से एक लड़का आता है और सत्यव्रत को धक्का देता निकल जाता है। सत्यव्रत लड़खड़ा जाता है]

सत्यव्रत : जरा-जरा से वच्चे तक देख के नहीं चलते। (जेब में हाथ डालता है जेब कट गई होती है) जेव काटना सीखते हैं (चिल्लाता है) जेव कतरा, जेव कतरा ! (फिर दौड़ने की कोशिश करते हैं, पर सिर पकड़कर बैठ जाता है)

गायक : दौड़ न सके सत्यव्रत, सोचा,
यह समाज का जहर विकार
सड़े हुए पानी में जैसे
होती कीड़ों की भरमार।
युवावर्ग की हालत इससे भी
ज्यादा हो रही खराव
दादागीरी, गुंडागीरी में
उसका अब है न जवाव।

दसवां दृश्य

[बस स्टैंड। सत्यव्रत बैठा है। लड़के बस के इंतज़ार में खड़े हैं]

लड़का-1 : कितने नंबर सही किए ?

लड़का-2 : यही चालीस नंबर। यह साला मेहता का बच्चा बहुत बदमाश है। इसे ठीक करना होगा। बार-बार चक्कर लगाकर मेरी सीट पर आता था। ऐसे आंख तरेरकर देखता था जैसे मैं उसकी तिजोरी तोड़ रहा हूं !

लड़का-3 : चल साले की मास्टरी घुसेड़ दें। सारी इनविजिलेटरी धरी रह जाए।

लड़का-4 : मैंने तो मेज पर चाकू रख दिया था। गोयल साहब की हिम्मत नहीं पड़ी। साठ नंबर नकल किए। तीन सवालों से तो कोई जान-पहचान ही नहीं निकली।

लड़का-1 : मैंने तो सोचा है, खन्ना साहब के घर जाऊंगा। साफ कह दूंगा, सर पास कर दीजिए वरना ठीक नहीं होगा।

लड़का-2 : चल, मैं भी चलूंगा। इस बार फेल हुआ तो बापजान घर से निकाल देंगे।

लड़का-3 : तेरे बाप की इतनी हिम्मत पड़ती है ?

लड़का-2 : बूढ़े आदमी हैं, नौकरी छूटी है, बीमार रहते हैं।

लड़का-1 : तो क्या सोचते हैं, पास हुए नहीं कि नौकरी मिल ज़ाएगी ? मैंने तो बापजान से साफ़ कह दिया है—मेरे बीच में न पड़ें। एक उन्होंने बड़ा कमाल किया है, एक मैं…

लड़का-4 : (बात काटकर) मैं तरकीब बताऊं ? हड़ताल करवा दें या परीक्षा का बहिष्कार। बस, यह साल तो निकल ही जाएगा किसी तरह।

सत्यव्रत : इस तरह साल निकालने से क्या फायदा होगा ?

लड़का-4 : यह कौन है ?

[अचानक तीन-चार लड़कियां आती हैं]

लड़का-1 : लो आ गईं मीना कुमारी।

लड़का-2 : ये चाहें तो हम पास हो जाएं।

लड़का-3 : ये तो पास हो ही जाएंगी।

लड़का-4 : ओ, दूर के मुसाफिर हमको भी साथ ले ले रे, हम रह गए अकेले रे ! (गाता है)

लड़का-1 : हाय-हाय, हम भी मेहता को जानते होते।

लड़का-2 : जानते नहीं, पहचानते होते।

लड़का-3 : पहचानते नहीं, मानते होते।

लड़का-4 : क्यों ज़बान लड़ाता है ?

लड़का-1 : तो क्या आंख लड़ाऊं ?

सत्यव्रत : शट अप ! स्कूलों-कालेजों में यही सीखते हो तुम लोग ?

लड़की-1 : यह ऋषि दयानंद कहां से बीच में आ गए ?

लड़की-2 : आसमान से। फ़रिश्ता है…

लड़की-3 : तुझे बचाने आया है।

लड़की-1 : पागल है क्या ?

लड़की-2 : पागल नहीं दीवाना है।

लड़का-1 : (सत्यव्रत से) जी, क्या फरमाया था आपने ?

सत्यव्रत : क्या तुम लोग स्कूलों-कालेजों में यही सीखते हो ?

लड़का-2 : जी नहीं, और भी बहुत कुछ सीखते हैं ।

सत्यव्रत : क्या ?

लड़का-4 : (सिर पर चपत मारकर) खड़ी जमाना…

लड़का-3 : (सिर पर चपत मारकर) पड़ी जमाना…

लड़का-2 : (सिर पर चपत मारकर) तड़ी जमाना…

लड़का-1 : छड़ी जमाना !

[सभी एक लय में 'खड़ी जमाना, पड़ी जमाना, तड़ी जमाना, छड़ी जमाना' कहते हैं और सत्यव्रत के चारों ओर घूम-घूम उसके सिर पर चपत मारते जाते हैं। लड़कियां खिलखिलाकर हंसती हैं]

सत्यव्रत : (चिल्लाकर) मैं अभी पुलिस को बुलाता हूं ।

लड़का-4 : तू क्या पुलिस कप्तान है ?

लड़का-3 : नहीं, पुलिस इसके बाप की है ।

लड़का-2 : खुद तो अपने बाप का है नहीं ।

लड़का-1 : पागल है साला !

सत्यव्रत : मैं इनसान हूं ।

लड़का-4 : तो फिर बीच में टांग क्यों अड़ाता है ?

लड़का-3 : गधा जो ठहरा ।

सत्यव्रत : हड़ताल, घेराव, परीक्षा का बहिष्कार, आगजनी, लूट-पाट, तोड़फोड़, मारपीट इस सबमें…

लड़का-4 : फायदा ही फायदा है ।

सत्यव्रत : तुम देश के कर्णधार हो ।

लड़का-1 : (गाता है) नैया डूबी लगा दे पार…

लड़का-2 : (सुर में सुर मिलाकर) ओ कर्णधार !

लड़का-3 : ओरे मेरे यार !…

लड़का-4 : (गाने को आगे बढ़ाता है)
तू भी दीवानी और हम भी दीवाने
कहना हमारा कोई न माने
ओ अलबेली नार !

लड़का-1 : नैया डूबी लगा दे पार···

लड़का-2 : ओ कर्णधार !

लड़का-3 : ओ मेरी यार ! हाय मीनाकुमारी !

सत्यव्रत : आप लोग कुछ तो शराफत···

लड़के : (सम्मिलित) हाय हाय हाय आफ़त (दोहराते जाते हैं)

गायक : और बुद्धिजीवी ? उसकी दोनों
टांगों के बीच में पूंछ
अवसरवादी, सुविधावादी
औ' दिमाग़ से छूंछ-छूंछ···
आगे बढ़ा सत्यव्रत जब,
तब जा उनसे भी टकराया
खाली बोतल-सा लहरों में
डूब न पाया उतराया ।

ग्यारहवां दृश्य

[सड़क पर। सत्यव्रत हारा, थका, निढाल खड़ा है। बुद्धिजीवी का प्रवेश]

बुद्धिजीवी : हलो ! सत्यव्रत तुम यहां कैसे खड़े हो सड़क पर ?

सत्यव्रत : यही सही जगह है जहां तुम जैसे बुद्धिजीवी को खड़ा होना चाहिए।

बुद्धिजीवी : सड़क के किनारे बुद्धिजीवी क्या करेगा ?

सत्यव्रत : यहां खड़े होने पर ही कुछ कर सकेगा।

बुद्धिजीवी : चलो, हमारी बैठक में चलो।

सत्यव्रत : मैं कहीं नहीं जाता। तुम्हारी बैठकें मज़ाक होती हैं।

बुद्धिजीवी : नहीं भई, हम सांप्रदायिक दंगों पर विचार करने जा रहे हैं।

सत्यव्रत : दंगे हो चुके, लोग मारे जा चुके। अब विचार करना आसान है।

बुद्धिजीवी : अरे, चलो तो। हम चाहते हैं सरकार ऐसा करे, लोग ऐसा करें···

सत्यव्रत : (बात काटकर) बस, आप कुछ न करें। मैं समझता हूं।

बुद्धिजीवी : शब्दों से अलग हम क्या कर सकते हैं भाई। हमारे हाथ में और कोई शक्ति तो है नहीं। आओ तो। सामने

ही 'बिरादरी हाल' में बैठक है।

सत्यव्रत : मैं ढोंगियों की बैठक में नहीं जाता।

बुद्धिजीवी : तुम हमें ढोंगी कैसे कहते हो? हर स्थिति पर हमने दो टूक खरे बयान दिए हैं। साफ़-साफ़ बात कही है। सांप्रदायिक दंगों पर हम साफ़-साफ़ कहना चाहते हैं कि यह मानव सभ्यता के लिए कलंक है। बर्बरता है। सरकार सांप्रदायिक संस्थाओं पर प्रतिबंध लगाए। भाई-चारे का प्रचार करे। दंगों की भयावहता पर फिल्में बनाए। गांव-गांव नाटक करवाए। प्रदर्शनियां आयोजित करे। लोगों का मन बदले।

सत्यव्रत : मैं चाहता हूं केवल आप अपने को बदलें। जो दूसरों से चाहते हैं खुद करे।

बुद्धिजीवी : तुम तो यहीं शुरू हो गए। तुम्हें भाषण देना है चलकर बैठक में दो।

सत्यव्रत : मैं भाषण नहीं देता। चुप रहना अच्छा समझता हूं।

बुद्धिजीवी : मैं सोचता हूं तुम चलते तो अच्छा रहता। सांप्रदायिकता पर कुछ खुलकर लिख सकते। हम लोग कुछ पैसा इकट्ठा करना चाहते हैं। सरकार से भी मदद लेंगे। सांप्रदायिक मसलों पर कुछ ठोस पुस्तकें छापेंगे। तुम हमारे लिए एक पुस्तक लिखो।

सत्यव्रत : मैं पुस्तक नहीं केवल एक पंक्ति लिखना चाहता हूं, 'तुम बुद्धिजीवी निकम्मे और घटिया लोग हो।'

बुद्धिजीवी : देखो। भाषण शुरू भी हो गए। मैं जाता हूं!

[लाउडस्पीकर से आती भाषणों की आवाज। सत्यव्रत बुद्धिजीवी को पकड़ लेता है]

पहली आवाज : धर्म ने इंसान को ऊपर उठाया है। जानवर से आदमी बनाया है। वही धर्म आज आदमी से जानवर बना

रहा है। जो धर्म प्रेम करना सिखाता था, वही आज लड़ना सिखाता है। यह गलत बात है। हमें इसका विरोध करना चाहिए। जो धर्म के नाम पर लड़ते हैं वह हमारे शत्रु हैं। हम बुद्धिजीवियों को उनसे लड़ना होगा। शत्रु को पनपने का मौक़ा न दो। अपनी-अपनी जगह हर धर्म अच्छा है। संसार का इतिहास इस बात का गवाह है हिंदू धर्म एक महान धर्म है…

दूसरी आवाज : बिरादरान ! इस्लाम नहीं चाहता कि खून खराबा हो। सियासत ही सारी लड़ाई की जड़ है। मजहबी मामलों में सियासत को दूर रखना चाहिए। लेकिन सियासत आज हर जगह टांगें अड़ाए है ! वह मजहब को बदनाम कर रही है। उसे फासिज्म में बदल रही है…

तीसरी आवाज : हम कलाकारों को चाहिए कि अपने-अपने माध्यम से हर बर्बरता का जवाब दें। ऐसा वातावरण कला के सृजन के लिए अहितकर है। कला के द्वारा ही हम लोगों का मन बदल सकते हैं। लेकिन हमारे पास साधन नहीं हैं। हमें एक प्रतिनिधिमंडल लेकर सरकार से मिलना चाहिए और उसे बताना चाहिए कि हम कलाकार इस लड़ाई में उसका हाथ बटाने को तैयार हैं। वह कलाकारों की मदद करे।

[लाउडस्पीकर पर भाषण की आवाज धीमी हो जाती है]

सत्यव्रत : (व्यंग्य करता है) यह तुम्हारी लड़ाई है। मेरा होना वहां जरूरी नहीं है। शब्द, शब्द, शब्द, जिनका कोई अर्थ नहीं रह गया है। चौकस शब्द। अपने मतलब के लिए सतर्क। आपको कुछ कहना नहीं है, कुछ करना नहीं है।

बुद्धिजीवी : (सकपकाकर) इसमें गलत क्या है ?

सत्यव्रत : वह दृष्टिहीनता जिससे ये अंधे शब्द निकलते हैं। वह दृष्टि जो सुरक्षा चाहती है, सुविधा चाहती है, यश चाहती है, प्रतिष्ठा और धन चाहती है। अर्थ नहीं चाहती। सही अर्थ की तलाश खोने से शुरू होती है, पाने से नहीं।

बुद्धिजीवी : खोने के लिए भी हमारे पास क्या है?

सत्यव्रत : (हंसता है) ईमान! और कह दो वह हम खो चुके हैं।

बुद्धिजीवी : तुम स्वयं बुद्धिजीवी होकर इस तरह की बात करते हो?

सत्यव्रत : मैं बुद्धिजीवी नहीं हूं। एक अतिसाधारण नागरिक हूं। और वहीं से सत्य की लड़ाई लड़ना चाहता हूं। तुम लड़ोगे मेरे साथ?

बुद्धिजीवी : तुम कुछ अस्वस्थ लगते हो।

सत्यव्रत : (हंसता है) समझ गया···समझ गया। सत्य बुद्धिजीवी को अस्वस्थ लगता है दूसरों को पागलपन।

बुद्धिजीवी : भई माफ़ करना। मैं जाता हूं। सभा में आने का वचन दे आया हूं। 'लोकतंत्र और सांप्रदायिक संगठन' पर मुझे बोलना है। नहीं जाऊंगा तो लोग बुरा मानेंगे।

सत्यव्रत : हां, और कल अखबार में नाम भी नहीं छपेगा।

बुद्धिजीवी : तुम मिलो किसी दिन। फिर बातचीत होगी। तुम कुछ उखड़े-उखड़े हो। To transcend an actual occasion does not mean being disconnected from it. Each external object has its own proper connection with each occasion समझे। फिर कभी।

सत्यव्रत : यह किसका कोटेशन है। दूसरों की जूठन जमा करके बुद्धिजीवी बनते हो?

बुद्धिजीवी : इस समय नहीं, फिर तुमसे निपटूंगा।

[जाता है। एक ग़रीब आदमी का चंदा का वक्सा लिये प्रवेश]

ग़रीब आदमी : बाबूजी अखंड कीर्तन के लिए चंदा चाहिए।

सत्यव्रत : अखंड कीर्तन किसलिए ?

ग़रीब आदमी : पाप के नाश और आत्मा की शांति के लिए स्वामी महेश्वरानंद जी आए हैं।

सत्यव्रत : पाप क्या है ?

ग़रीब आदमी : मैं क्या जानूं पाप क्या है ? मैं तो स्वयंसेवक हूं। मुझे चंदा वसूलने का काम मिला है।

सत्यव्रत : तुम क्या करते हो ?

ग़रीब आदमी : मैं साइकिल में पंचर लगाता हूं।

सत्यव्रत : कितना कमा लेते हो ?

ग़रीब आदमी : यही तीन एक रुपये।

सत्यव्रत : चंदा इकट्ठा करने का क्या मिलेगा ?

ग़रीब आदमी : यह तो धर्म का काम है।

सत्यव्रत : एक रुपया भी तुम्हें नहीं मिलेगा ?

ग़रीब आदमी : नहीं साहेब ! धर्म के काम में रुपया लेना पाप है।

सत्यव्रत : कितने दिन कीर्तन होगा ?

ग़रीब आदमी : सात दिन।

सत्यव्रत : सात दिन तुम्हारा काम बंद रहेगा ?

ग़रीब आदमी : राम का नाम सुनूंगा साहेब।

सत्यव्रत : खाना-पीना ?

ग़रीब आदमी : भंडारा खुला होगा।

सत्यव्रत : जब तुम पाप क्या है जानते नहीं तो कैसे मालूम होगा पाप का नाश हो गया ?

ग़रीब आदमी : पाप से ही आज सारी तकलीफ़ है साहेब, चारों तरफ़ पाप बढ़ गया है।

सत्यव्रत : तुम्हें वड़ा हुआ पाप दिखाई देता है ?

ग़रीब आदमी : स्वामी जी यही कहते हैं साहेब ! हमें कुछ नहीं दिखाई देता ।

सत्यव्रत : कितने आदमी चंदा वसूल कर रहे हैं ?

ग़रीब आदमी : हजारों आदमी साहेब । मैं छोटा आदमी हूं साहेब, छोटे लोगों के पास जाता हूं । साठ लाख रुपया वसूल होगा साहेब ।

सत्यव्रत : शांति के नाम पर इस ग़रीब देश में इतने रुपयों की बरबादी ! यही पाप है । स्वामी महेश्वरानंद कहां रहते हैं ?

ग़रीब आदमी : कोठी पर ।

सत्यव्रत : किस पर चलते हैं ?

ग़रीब आदमी : कार पर ।

सत्यव्रत : यही पाप है । तुम दर-दर ठोकर खाकर चंदा वसूल कर रहे हो । वह ऐश कर रहे हैं, यही पाप है ।

ग़रीब आदमी : वह साक्षात भगवान है साहेब । महात्मा हैं ।

सत्यव्रत : हमें उनके पास ले चलो ।

ग़रीब आदमी : चलिए पास ही में आश्रम है ।

[दोनों का प्रस्थान]

गायक : धर्म जोंक-सा चूस रहा है
हम देते किस्मत को दोष
कौन शत्रु है, कौन मित्र है
इसका रहा न हमको होश ।
सोच सत्यव्रत ले ग़रीब को
पहुंचे आश्रम के तत्काल
जहां विछा था मंत्र गंध का
मोहक मगर विषैला जाल ।

बारहवां दृश्य

[परलोक आश्रम। पार्श्व में कीर्तन हो रहा है। बीच-बीच में मंत्रपाठ के साथ 'स्वाहा'-'स्वाहा' की आवाजें आ रही हैं। स्वामी महेश्वरानंद गद्दी पर बैठे हैं]

सत्यव्रत : सब कुछ स्वाहा हो रहा है। आप ही स्वामी महेश्वरानंद हैं।

महेश्वरानंद : हां पुत्र। तुम बहुत दुखी लगते हो।

सत्यव्रत : हां, आपके कर्मों से दुखी हूं।

महेश्वरानंद : मन को शांत रखना सीखो। मन शांत नहीं तो सब मिथ्या है।

सत्यव्रत : आज के जमाने में मन शांत रहना मिथ्या है।

महेश्वरानंद : ज़माना नहीं बदलता, आदमी बदलता है। मन शांत रखो ज़माना बदल जाएगा।

सत्यव्रत : आप जैसे आदमी जब तक हैं, जमाना कैसे बदलेगा ? मन शांत कैसे रहेगा ?

महेश्वरानंद : तुम बहुत परेशान हो बेटा !

सत्यव्रत : हां, इस ग़रीब देश में आप शांति के लिए साठ लाख रुपया खर्च करेंगे···

महेश्वरानंद : तेरा मन धन को लेकर चिंतित है ।

सत्यव्रत : धन के दुरुपयोग से चिंतित है । जितने का आप घी और अन्न जला देंगे, उतने में स्कूल और अस्पताल खुल सकते हैं ।

महेश्वरानंद : धर्म के काम को दुरुपयोग समझते हो । तेरा मन विकार-ग्रस्त है ।

सत्यव्रत : यह धर्म का नहीं अधर्म का काम है ।

महेश्वरानंद : तेरा चित्त अशांत है । तेरे मन में पाप है । कुछ पूजापाठ करते हो ?

सत्यव्रत : मैं यह सब ढोंग समझता हूं ।

महेश्वरानंद : ईश्वर का नाम लेना ढोंग है ? पाप शांत हो, पाप शांत हो...

सत्यव्रत : ईश्वर का नाम चिल्ला-चिल्लाकर नहीं लिया जाता । उसका नाम कोई विज्ञापन नहीं है ।

महेश्वरानंद : पाप वचन मुख से न निकाल ।

सत्यव्रत : पाप क्या है ?

महेश्वरानंद : शंका करना पाप है ।

सत्यव्रत : जो आप कहें वह मान लेना पुण्य है ? यह पाप नहीं स्वार्थ की परिभाषा है । धर्म स्वार्थी हो गया है ।

महेश्वरानंद : धर्म पर अनास्था !

सत्यव्रत : जो धर्म शंका की अनुमति नहीं देता वह धर्म नहीं है । तुम आदमी को विवेक शून्य, बेजबान बनाकर अपने गढ़े सांचे में ढालना चाहते हो । अब धर्म के नाम पर ऐसी तानाशाही नहीं चलेगी । दूसरों की खून-पसीने की कमाई पर मौज उड़ाना असली पाप है । वास्तव में पापी तुम हो ।

महेश्वरानंद : तुम शुभ कार्य में विघ्न डालने आए हो ?

सत्यव्रत : हां, मैं इसका विरोध करने आया हूं।

महेश्वरानंद : तुमको मलेच्छों ने भेजा है। यहां हंगामा मत करना। धर्म के स्वयंसेवक तुम्हारी एक नहीं चलने देंगे।

सत्यव्रत : मैं जानता हूं, आपके पास तर्क नहीं ताकत है। आप अंधे हैं।

महेश्वरानंद : अंधे तुम हो जिसकी दृष्टि भौतिक है। यह दृष्टि अशांत करती है।

महेश्वरानंद : देश में इतनी समस्याएं हैं—ग़रीबी, अशिक्षा, हिंसा। सबकी रामबाण दवा आपके पास है ? आपकी आध्यात्मिकता अफ़ीम है।

महेश्वरानंद : युवक इसमें तुम्हारा दोष नहीं। आज की शिक्षा का दोष है। पश्चिमी शिक्षा यही सिखाती है।

सत्यव्रत : आप चाहेंगे कि लोकतंत्र समाप्त हो जाए, कहीं कोई शंका न हो। आप तानाशाह हों। और जनता आध्यात्मिकता के नाम पर अफ़ीम खिलाकर सुला दी जाए।

महेश्वरानंद : तुम जाओ। तुममें आस्था नहीं है। तुम लाइलाज हो।

सत्यव्रत : लेकिन आप सब लाइलाज नहीं हैं। आपकी पोल काफ़ी खुल चुकी है और भी खुलेगी। लेकिन देर लगेगी क्योंकि आप दूसरों के भय पर अपनी नींव डालते हैं। शोषण करते हैं।

महेश्वरानंद : (चीखकर) इसे यहां से निकालो। यह नास्तिक है। धर्म का शत्रु है।

[स्वयंसेवक 'नास्तिक है—'मारो-मारो' कहते आते हैं और उसे घसीटकर ले जाते हैं]

गायक : धर्म चल रहा है यूं सत्ता
की ताक़त पर चारों ओर,

जितनी सत्ता ढोंगी होगी
उतना होगा उसका ज़ोर
चकराकर गिर पड़े सत्यव्रत
एक पार्क के कोने में
फ़र्क़ नहीं लगता था कुछ
अपने होने ना होने में।

तेरहवां दृश्य

[पार्क। अंधेरा छाया हुआ है। सत्यव्रत थककर चूर, बोखार में तपता आंख बंद किए पड़ा है। एक आदमी छुरा लिये आता है। एक दूसरे आदमी को मारता है। एक चीख सुनाई देती है। पुलिस सीटियां बजाती आती है।]

पुलिस : (सत्यव्रत पर टार्च की रोशनी डालते हुए) तुम कौन हो ?

सत्यव्रत : सत्यव्रत। जिसने चाकू मारा है वह उस तरफ़ गया है। जल्दी करो उसे पकड़ो। मुझसे क्या पूछते हो ?

पुलिस : तुमने उसे देखा है ?

सत्यव्रत : हां, पर ठीक से नहीं। उसका मुंह दूसरी तरफ था।

पुलिस : तुम यहां क्या कर रहे हो ?

सत्यव्रत : दुनिया को देख रहा हूं।

पुलिस : तुमने इसे पकड़ा क्यों नहीं ?

सत्यव्रत : मैं उस समय कुछ सोच नहीं सका था अब अनुमान लगाता हूं। लेकिन जिस तरह तुम मुझसे पूछ रहे हो, उससे लगता है तुम उसे नहीं पकड़ना चाहते। तुम सब उसे जानते हो पर पकड़ोगे नहीं। यह हत्या तुमने

करवाई है।

पुलिस : तुम छंटे बदमाश लगते हो। सीधा जवाव नहीं देते।

सत्यव्रत : सीधा जीता जो हूं।

[दरोगा का प्रवेश]

पुलिस : यह आदमी चश्मदीद गवाह है।

सत्यव्रत : हां, मैं समाज के हर कुकर्म का गवाह हूं।

दरोगा : (देखकर) यह तो सुवहवाला आदमी है। क्यों वे मार खाकर भी होश दुरुस्त नहीं हुआ।

सत्यव्रत : मैंने क्या किया ?

पुलिस : सही बात क्यों नहीं बता रहा है ?

सत्यव्रत : मैं सही बात ही वताता हूं और कुछ नहीं और कुछ न मैं जानता हूं न जानना चाहता हूं।

दरोगा : क्या उस आदमी के बड़ी-वड़ी मूंछें थीं ? दाहिनी आंख के ऊपर भौंहों के पास कटे का निशान था ? ठिगना क़द और रंग सांवला था ?

सत्यव्रत : मैंने यह सव नहीं देखा।

दरोगा : उसे देखा और यह सब नहीं देखा ?

सत्यव्रत : नहीं मैं···आधी वेहोशी में था और उधर अंधेरा था।

दरोगा : बंद करो इसे। यह चालाक आदमी है और उसी गिरोह का है।

सत्यव्रत : मेरा कोई गिरोह नहीं। मैं अकेला आदमी हूं। सच बोलने वाले का कोई नहीं होता, मैंने इसे समझ लिया है। मुझे तंग मत करो।

[सत्यव्रत वेहोश होने लगता है। पुलिस उसका सिर हिलाता है]

पुलिस : इसे तेज़ बुखार है।

दरोगा : मर जाएगा क्या साला ? (सत्यव्रत से) तुम होश में

हो ?

[सत्यव्रत कुछ नहीं बोलता]

दरोगा : (पुलिस से) इसे थाने ले जाओ। उठा ले जाओ। उस साले नक्सली के खिलाफ़ इसकी गवाही लिखकर, यदि होश में आ जाए, दस्तखत करवा लो, नहीं अंगूठा निशानी लगवा लो। इसकी गवाही जरूरी है। फिर मैं उसे देख लूंगा। बचकर कहां जाएगा ? जिसे देखो वही समाज बदलने चलता है। यह साला गांधीवादी वह नक्सली। उसे मरवा दिया यह साला अपने-आप मर जाएगा।

गायक : गलत बात से लड़ते-लड़ते
हुई इस तरह आधी रात
अस्पताल में पड़े सत्यव्रत
मन पर था असह्य आघात
क्या दुनिया ऐसे ही चलती
जाएगी—थे सोच रहे
ईश्वर, नियति, धर्मग्रंथों का
जैसे थे मुंह नोच रहे।

चौदहवां दृश्य

[अस्पताल । सत्यव्रत बिस्तरे पर पड़ा है । पत्नी बग़ल में खड़ी है]

सत्यव्रत : (पत्नी से) तुम गई नहीं ?

पत्नी : तुम दिन-भर घर क्यों नहीं आए ?

सत्यव्रत : काम में लगा था, छुट्टी नहीं मिली ।

पत्नी : तुम्हारे न लौटने पर घबराकर थाने रपट लिखाने गई । देखा तुम बोखार में बेहोश बाहर पड़े हो । शरीर पर मार के नीले-नीले निशान हैं । यहां अस्पताल ले आई ।

सत्यव्रत : (चीखकर) यह अस्पताल है या बूचड़खाना ? मैं यहां नहीं रहूंगा । यहां हत्या की जाती है ।

[नर्स का इंजेक्शन लिये प्रवेश]

नर्स : आप लोग जाइए । फिर आइएगा । बात करने से मरीज़ की हालत और बिगड़ सकती है ।

[डाक्टरका प्रवेश]

डाक्टर : (नर्स से) अरे ! यह वही आदमी है जो सवेरे दंगा कर रहा था ।

सत्यव्रत : मैं दंगा नहीं कर रहा था, सही बात कह रहा था ।

डाक्टर : तुम्हें अस्पताल पसंद नहीं । घर जाना चाहते हो ?

अपनी जिम्मेदारी पर जा सकते हो।

सत्यव्रत : मेरा कोई घर नहीं है। अपनी जिम्मेदारी पर मैं कहीं जाऊंगा नहीं पर सत्य ज़रूर कहूंगा। (बेहोशी आने लगती है)

डाक्टर : (पत्नी से) इन्हें कोई गहरा धक्का लगा है, दिमाग़ ठीक नहीं रहा। कब से इनकी यह हालत है?

पत्नी : आज सुबह आंख खुलते ही जाने क्या हो गया। चिल्लाने लगे, मैं सत्य के लिए लड़ूंगा।

सत्यव्रत : (कुछ होश में) मैंने पूरे होश-हवास में कहा था। मुझे कुछ नहीं हो गया। (फिर बेहोशी)

डाक्टर : (पत्नी से) फिर?

पत्नी : फिर दिन-भर घर आए नहीं। आधी रात थाने के पास बोखार में बेहोश पड़े मिले।

डाक्टर : अक्सर इन्हें ऐसा होता है?

पत्नी : पहले कभी नहीं हुआ था। हां, झूठ और बेइमानी के काम से पहले भी चिढ़ते थे। खुद नहीं करते थे पर करनेवालों से लड़ते नहीं थे। ग़रीबी में गुजारा कर लेते थे। इधर लड़ने लगे थे। गांधी, तिलक बड़े-बड़े लोगों की किताबें पढ़ते थे, हर समय उन्हीं की बात करते थे। (गला रुंध जाता है) क्या पता था इसका नतीजा यह होगा!

डाक्टर : नर्वस ब्रेकडाउन। दवा दे रहे हैं। लेकिन इन्हें आगे हर ऐसी चीज़ से बचाना होगा जिससे तनाव पैदा हो, भड़कते हों।

सत्यव्रत : (कुछ होश में उठते हुए) ठीक कहते हो डाक्टर। अब ऐसा कुछ भी नहीं, जिसे देखकर गुस्सा न आता हो। शांति मुझे सच्चाई में मिल सकती है पर वह कहीं नहीं

है। जो ग़लत है उसे मैं ग़लत कहूंगा। उसके लिए लड़ूंगा। मुझे जीवन नहीं चाहिए। झूठ से घिरा जीवन। आज सुबह तुमने एक आदमी को मार डाला। रोज़ कितने ग़रीबों को मारते हो मैं नहीं जानता। तुम्हें देखकर मेरा खून खौल रहा है: तुम्हारे अस्पताल से मुझे नफ़रत है, मैं यह बात पागलपन में नहीं पूरे होश-हवास में कह रहा हूं। तुम सब खुशामदी हो। तुम लोगों में कहीं भी इंसानियत नहीं है। आदमी की कीमत तुम नहीं जानते। (क्रोध में तमतमाता है)

पत्नी : देखिए इन्हें फिर कुछ होने लगा।

डाक्टर : इन्हें अकेला छोड़ना होगा। जब तक पूरी तरह स्वस्थ न हो जाएं (नर्स से) नर्स, इन्हें बेड के चारों तरफ परदा लगा दो।

सत्यव्रत : (चिल्लाता है) मैं स्वस्थ हूं। अस्वस्थ तुम सब हो। मुझे दुनिया से मत काटो, सबसे अलग मत करो···मैं लड़ूंगा ···मैं लड़ूंगा···

[दृश्य लोप]

उद्घोषक-1 : उसके चिल्लाने की यह आवाज रह-रहकर आती रही। उसके बिस्तरे के चारों ओर आड़ कर दी गई थी जिससे वह दूसरों को न देख सके न दूसरे उसे देख सकें। इस दुनिया में रहकर भी यह दुनिया उससे अलग कर दी गई थी। यह दुनिया जिसे वह बदलना चाहता था।

उद्घोषक-2 : दो दिन रहने के बाद। तीसरे दिन सुबह वह नहीं था। वह बात-बात पर लड़ता था। ठीक खाना न मिलने पर, पूरी दवा न मिलने पर वह चिल्लाता था। डाक्टर, नर्स कोई उसके पास नहीं फटकता था। मरीज़ कहते थे। ऐसे भी लोग इस दुनिया में होते हैं और बेमौत मरते

हैं···मरते नहीं मार डाले जाते हैं।

उद्घोषक-3 : क्या यह लड़ाई अर्थहीन थी ? क्या आज के समाज में एक अकेले आदमी की ग़लत बातों के लिए लड़ाई अर्थहीन है। यदि नहीं तो कौन है जिसके साथ मिलकर वह सत्य की लड़ाई लड़े ? है कोई ? है कोई ? (आवाज गूंजती है)

गायक : यही तय करें आप हम सभी
ग़लत काम अब करें नहीं
जो भी आए सहें उसे
औ' कभी किसी से डरें नहीं।
बदले नहीं व्यवस्था जब तक
ऐसे ही लड़ना होगा
जन जन के दिल में अपनी
आस्था से ही गड़ना होगा।

(समापन : समवेत गान)

लड़ाई जारी है
लड़ाई जारी है।
यह जो छापा तिलक लगाए
और जनेऊधारी है
यह जो जातपात पूजक है
यह जो भ्रष्टाचारी है
यह जो खून चूसता रहता है
मजदूर किसानों का
यह जो भूपति कहलाता है
जिसकी साहूकारी है
उसे मिटाने और बदलने की करनी तैयारी है।

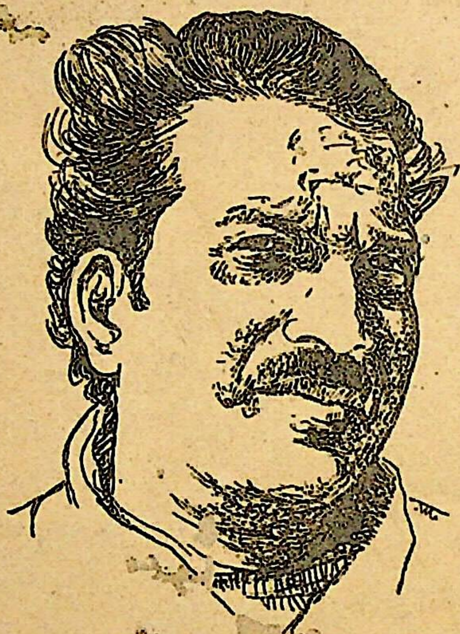
लड़ाई जारी है
लड़ाई जारी है।

यह जो काला धन फैला है
यह जो चोरबजारी है
सत्ता पांव चूमती जिसके
जो सरमाएदारी है
यह जो यम-सा नेता है
मतदाता की लाचारी है
यह झूठी चुनावबाज़ी
हथकंडों की बलिहारी है

उसे मिटाने और बदलने की करनी तैयारी है।
लड़ाई जारी है
लड़ाई जारी है।

(समाप्त)

०००



सर्वेश्वरदयाल सक्सेना—जन्म : बस्ती (उ० प्र०) 15 सितंबर, 1927; शिक्षा : ऐंग्लो संस्कृत स्कूल, बस्ती, क्वींस कालेज, वाराणसी, प्रयाग विश्वविद्यालय; मास्टरी, क्लर्की, आकाशवाणी में सहायक प्रोड्यूसरी की, और अब 'दिनमान' में प्रमुख उप-संपादक हैं। 'तीसरा सप्तक' के कवि। नई कविता के अधिष्ठाता कवियों में। इधर बच्चों के साहित्य; नृत्यनाट्य और नाटकों के लेखन की ओर विशेष झुकाव। 'बकरी' द्वारा हिन्दी नाटकों को एक नई दिशा दी, 'रूपमती-बाजबहादुर' के द्वारा (बिरजू महाराज के निर्देशन में) पंत के बाद पहली बार नृत्यनाट्य की दिशा में रचनात्मक पहल की और 'बतूता का जूता' तथा 'महंगू की टाई' द्वारा हिन्दी में पहली बार नर्सरी कविता-लेखन की सही शुरूआत की। भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त कवि और कथाकार के रूप में रूसी, जर्मन, पोलिश, चेक, बुलारी, इतालवी, जापानी आदि विश्व की अनेक भाषाओं में अनूदित।